KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY

Website: www.kgcollege.ac.in Phone: 0481 2505212 Email: mail@kgcollege.ac.in

3.3.2 BOOKS AND CHAPTERS

2021-22		
SL NO	**NAME OF AUTHOR**	**BOOK**
1	Dr A Priya	Agey Vichar Aur Chintan
2	Dr A Priya	Hindi Sahithy Mein Vividh Vimarsh
3	Dr A Priya	Hindi Sahithya Vimarsh Ke Adne Mem
4	Dr A Priya	Hindi Mein Keraleeyom Ke Kadam
5	Dr A Priya	Pravasi Masdoori Ki Samasya Chunouthiya Our Samadhan
6	Dr A Priya	Hindi Sahity Adivasi Chetana Ki Parakh
7	Dr A Priya	Kavitha Ki Mahayathra
8	Dr A Priya	Barathathil Rajakeey Samajik Chalvali
9	Dr A Priya	Nai Hi Ka Naipunya Hindi Patrika

Prof.(Dr.) Renny P. Varghese
Principal
Kuriakose Gregorios College
Pampady, Kottayam - 686 502

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

सम्पादक
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

अज्ञेय

विचार और चिंतन

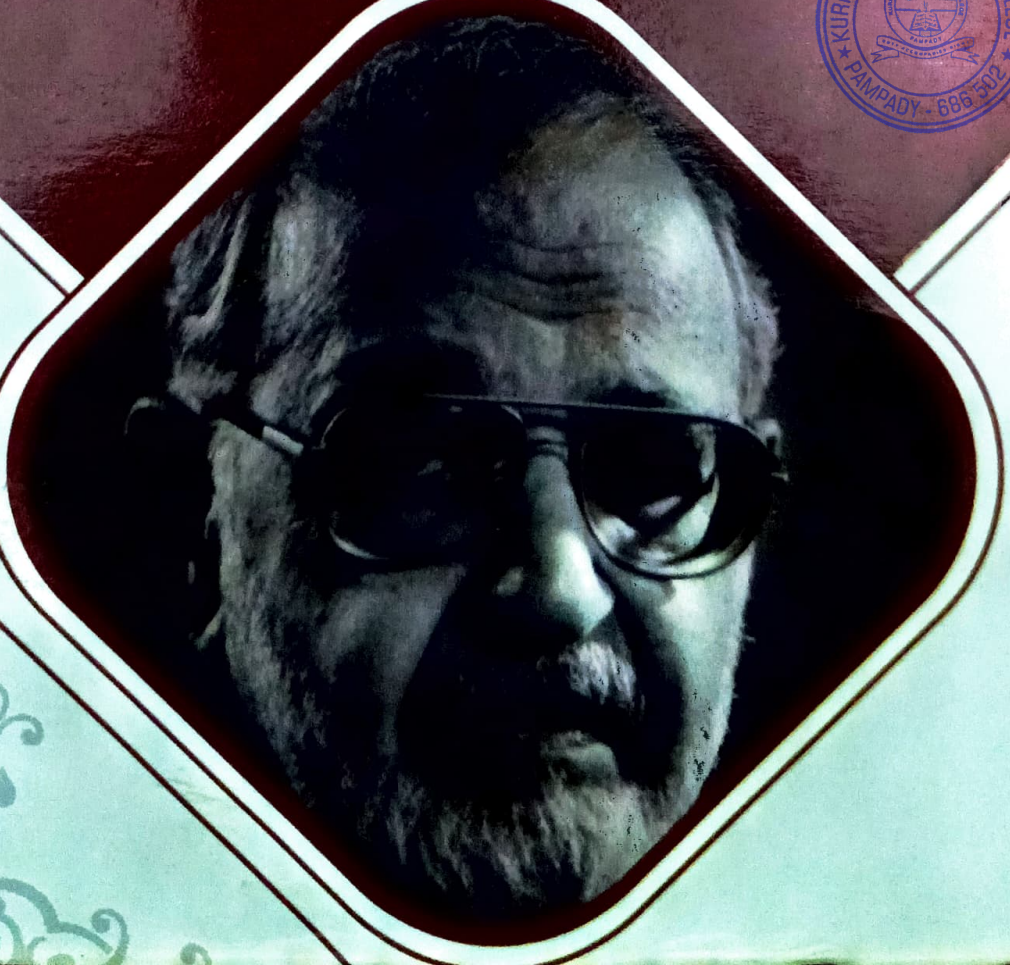

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

जन्म : 2 दिसम्बर 1979 (हिमाचल प्रदेश के जिला शिमला की तहसील ठियोग के अंतर्गत घूण्ड के नमाणा गाँव में)

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी, इतिहास, समाजशास्त्र), एम.एड., एम.फिल, (हिन्दी), पी-एच.डी. (हिन्दी) हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला से।

शोध व प्रकाशन :

- अज्ञेय का कहानी साहित्य एवं मानव मूल्य
- रचनाकारों की सृजनधर्मिता (सम्पादित)
- सृजन के आयाम (सम्पादित)
- अज्ञेय : विचार और चिन्तन (सम्पादित)
- हिन्दी साहित्य में विविध विमर्श (सम्पादित)
- अज्ञेय की रचनाधर्मिता (सम्पादित)
- हिन्दी दलित साहित्य : विमर्श के आईने में (सम्पादित)
- हिन्दी साहित्य में स्त्री चेतना (सम्पादित)
- हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श (सम्पादित)
- हिन्दी भाषा एवं साहित्य
- सृजन के सरोकार (सम्पादित)
- आध्यात्मिक चिंतन
- संस्कृति और संस्कार
- हिन्दी साहित्य मंजूषा
- विभिन्न समाचार पत्रों एवं साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में आलोचनात्मक समीक्षात्मक एवं अनुसंधानात्मक शोध पत्रों का प्रकाशन
- अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों में पत्र वाचन।

सम्प्रति : हिमाचल प्रदेश सरकार के उच्चतर शिक्षा विभाग में कार्यरत।

सम्पर्क : 'शर्मा निवास' नमाणा, पो.घूण्ड, तहसील ठियोग, जिला-शिमला (हि.प्र.) 171220

संपर्क : 9418001092, 9817101092, 8628901092

ई-मेल : surendersharma179@gmail.com, surendersharma279@gmail.com

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE ★ PAMPADY - 686 502 ★

Also available at : Flipkart amazon

विकास प्रकाशन, कानपुर

311 सी, विश्वबैंक बर्रा, कानपुर-208027

शोरूम : 110/138 मिश्रा पैलेस, जवाहर नगर, कानपुर-12

फोन : 0512-2543549

मोबाइल : 9415154156, 9450057852

E-mail : vikasprakashankanpur@gmail.com
vikasprakashanknp@gmail.com

Website : www.vikasprakashan.com

ISBN 978-93-90688-55-5

9 789390 688555 >

₹ 595.00

आवरण चित्र : साभार नेट

मूल्य : पाँच सौ पंचानवे रुपये मात्र

पुस्तक	:	अज्ञेय : विचार और चिंतन
सम्पादक	:	डॉ. सुरेन्द्र शर्मा
प्रकाशक	:	**विकास प्रकाशन** 311 सी., विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर- 208027
संस्करण	:	प्रथम, 2021 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	शुभी कम्प्यूटर, कानपुर
मुद्रक	:	छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मूल्य	:	595/-
ISBN	:	978-93-90688-55-5

10

अज्ञेय की कविता में प्राकृतिक सौंदर्यबोध

डॉ. प्रिया ए.

कविता में सौंदर्यबोध उसके आंतरिक सूक्ष्म सौंदर्य के ज्ञान से होता है। कवि अपनी अर्जित बुद्धि एवं विवेक का इस्तेमाल करते हैं और उसके द्वारा प्राप्त ज्ञान, अनुभव, संवेदना एवं यथार्थ के धरातल पर कविता लेखन में जुड़ जाते हैं। अपनी रचना के द्वारा वस्तु, दृश्य, पंक्ति और ध्वनि का शब्दांकन करते हैं। अपनी सौंदर्यानुभूति से युक्त रचना को सर्वश्रेष्ठ ढंग से जन-सामान्य के सम्मुख उपस्थित करना चाहते हैं। प्राकृतिक उपादानों से, अपने आस-पास की गतिविधियों से, समुदाय से, अपने परिवार से प्राप्त अनुभव जन्य उच्चता को समाज की प्रगति के लिए रचना चाहते हैं। निष्काम भाव से रचनारत होकर पूरी लगन और निष्ठा के साथ अपनी स्वच्छता, उत्कृष्टता व मानसिक पवित्रता के माध्यम से अपने कविकर्म को निभाते हैं। प्रयोगवादी कवि सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' प्राकृतिक सौंदर्यबोध के उपासक हैं। उनकी रचनाओं में प्रकृति के प्रति गहरे लगाव की भावना को देख सकते हैं। प्रकृति के एक पूरे चित्र-श्रृंखला उनकी कविता में शामिल होती हैं। पशु-पक्षी, मनुष्य, प्रकृति, पहाड़, सागर जैसी तमाम चीजें अज्ञेय की कविता में व्याप्त रहती हैं। इसके माध्यम से वे मुक्ति और सीमाहीन आत्मविस्तार के खुलेपन के बोध की तरफ हमारा मार्गदर्शन कराते हैं। भग्नदूत, चिन्ता, इत्यलम, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये, अरी ओ करुणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, क्यों मैं उसे जानता हूँ, सागर मुद्रा, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ, महावृक्ष के नीचे, नदी की बाँक पर छाया आदि उनके प्रमुख काव्य-संकलन हैं।

अज्ञेय का रचनात्मक मन हमेशा नए उपमानों और प्रतीकों की खोज करता रहता है। पुराने प्रतीकों और उपमानों के प्रयोग में वे संतुष्ट नहीं हैं। अपनी प्रेमिका के सौंदर्य-वर्णन के लिए उन्होंने एक नए उपमान का अन्वेषण प्रकृति से, आस-पास की जगत से किया। इस नए उपमान की चर्चा 'कलगी बाजरे' की नामक कविता

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

हिन्दी साहित्य में विविध विमर्श

संपादक :

डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

सुरेन्द्र शर्मा

जन्म : 02 दिसम्बर, 1979 (हिमाचल प्रदेश के जिला शिमला की तहसील ठियोग के अंतर्गत घूण्ड के नमाणा गांव में)

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी, इतिहास, समाजशास्त्र), एम.एड., एम.फिल. (हिन्दी), पीएच.डी. (हिन्दी), हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला से।

शोध व प्रकाशन : ◆अज्ञेय का कहानी साहित्य एवं मानव मूल्य (आलोचनात्मक पुस्तक), ◆हिन्दी भाषा एवं साहित्य, ◆रचनाकारों की सृजनधर्मिता (सम्पादित), ◆सृजन के सरोकार (सम्पादित), ◆सृजन के आयाम (सम्पादित), ◆आध्यात्मिक चिंतन, ◆अज्ञेय की रचनाधर्मिता (सम्पादित), ◆हिन्दी साहित्य में स्त्री चेतना (संपादित), ◆अज्ञेय : विचार और चिन्तन (सम्पादित), ◆संस्कृति और संस्कार, ◆हिन्दी दलित साहित्य: विमर्श के आईने में (सम्पादित), ◆हिन्दी साहित्य में विविध विमर्श (सम्पादित), ◆हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श (संपादित), ◆हिन्दी साहित्य मंजूषा। ◆विभिन्न समाचार पत्रों एवं साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में आलोचनात्मक, समीक्षात्मक एवं अनुसन्धानात्मक शोध पत्रों का प्रकाशन, ◆अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर की संगोष्टियों में पत्र वाचन।

सम्प्रति : हिमाचल प्रदेश सरकार के उच्चतर शिक्षा विभाग में कार्यरत।

सम्पर्क : 'शर्मा निवास' नमाणा, पत्रालय-घूण्ड, तहसील-ठियोग, जिला-शिमला (हि.प्र.) पिन : 171220

संपर्क सूत्र : 94180-01092, 98171-01092, 86289-01092

E-mail : surendersharma179@gmail.com
: surendersharma279@gmail.com

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Available on Amazon
Available on flipkart

मनीष पब्लिकेशन्स
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
Mobile : 09968762953
E-mail : manishpublications@gmail.com

ISBN 978-81-953548-9-4

₹800.00/-

ISBN : **978-81-953548-9-4**

© : संपादक

प्रकाशक : मनीष पब्लिकेशन्स
471/10, ए-ब्लॉक, पार्ट-द्वितीय,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
मो. नं. 09968762953
email : manishpublications@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : ₹ 800/-

शब्द संयोजक : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली

आवरण : अमित

मुद्रक : पूजा ऑफसेट, जगतपुरी, दिल्ली-110093

Hindi Sahitya Mein Vividh Vimarsh
Edited by Dr. Surendra Sharma

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

समकालीन हिन्दी कविता और आदिवासी जीवन

डॉ. प्रिया ए.
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल-686502

वर्तमान समय में हमारे देश में उत्पीडित समुदायों पर अध्ययनों की प्रक्रिया हो रही है। इसके तहत शोषित उत्पीड़ित आदिवासी समुदाय को चिन्हित करके उनकी पहचान को सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा रहा है। देश के मूल निवासी माने जानेवाले तमाम आदिम समुदायों का सामूहिक नाम है 'आदिवासी'। आदिम युग तक के इतिहास का द्योतन इस शब्द से संभव होता है; पर इनके जीवन की वास्तविक हालत को समकालीन हिन्दी कविता रेखांकित करती है। आदिवासी कवयित्री जसिन्ता केरकेट्टा ने अपने समुदाय के भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत की है। उनके दो काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उनका पहला काव्य-संग्रह (2016) अंगोर और दूसरा काव्य संग्रह जड़ों की ज़मीन (2018) आदिवासी अस्मिता एवं अस्तित्व के लिए उनके संघर्ष की गाथा को बुलंद करते हैं। साम्राज्यवादी ताकतों की नई आर्थिक नीतियों ने आदिवासी शोषण - उत्पीड़न की प्रक्रिया को त्वरित किया। इसके विरुद्ध प्रतिरोधात्मक रवैए को उन्होंने अपनाया है। आदिवासी अस्मिता पर व्याप्त संकटों के आयामों को दर्शाने के साथ-साथ अपनी रचनात्मक प्रक्रिया से वर्चस्ववादी ताकतों के जिरह खुले हस्तक्षेप की पहल भी की है। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने प्रकृति से जुड़े गहरे चिंतन को, आदिवासी समुदाय की जल-जंगल-ज़मीन-ज़मीर और जुबान के संघर्ष को दर्ज किया है। आदिवासी संस्कृति से जुड़ी संवेदनाओं की प्रकृति की हर एक चीज़ में पहचानने का प्रयास भी इसमें किया गया है। जंगल, फूल, नदी, पहाड़, गाँव आदि इस समुदाय के जीवन के निकट बसते हैं। बाज़ारीकरण, शहरीकरण जैसे भूमंडलीकरण परिवेश में आदिवासी समाज को कई प्रकार के संकटग्रस्त परिवेश से जूझकर जीवन बिताना पड़ता है।

शहरीकरण की प्रक्रिया में आदिवासी गाँव उजाड़ दिए गए हैं। जीवित रहने

K.G. COLLEGE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

हिन्दी साहित्य

विमर्श के आईने में

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

संपादक
डॉ. पायल लिल्हारे
डॉ. श्याम मोहन पटेल

हिन्दी साहित्य : विमर्श के आईने में

'हिंदी साहित्य : विमर्श के आईने में' संपादित पुस्तक वर्तमान समय में व्याप्त विभिन्न प्रकार की असमानताओं के हक में आवाज उठाने का एक प्रयास है। इस किताब में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श, दिव्यांग विमर्श, बाल विमर्श, वृध्द विमर्श, अल्पसंख्यक (मुस्लिम) विमर्श, किसान विमर्श, ग्रामीण विमर्श, लोक विमर्श, संस्कृति विमर्श, भाषाई विमर्श, मीडिया विमर्श, सत्ता विमर्श, भ्रष्टाचार विमर्श, शोध विमर्श एवं पुरुष विमर्श से संबंधित विविध लेख है जो शोधार्थियों, प्राध्यापकों एवं सुधी पाठकों के लिए उपयोगी है।

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Also available at : flipkart amazon

वान्या पब्लिकेशंस
3ए-127 आवास विकास, हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर-208021
9450889601, 7309038401
vanyapublicationskanpur@gmail.com
info@vanyapublications.com
www.vanyapublications.com

ISBN 978-93-90052-11-0
₹1100/-

rudra graphics
आवरण : के. रवीन्द्र

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN : 978-93-90052-11-0

मूल्य : एक हजार सौ रुपये मात्र

पुस्तक	:	**हिन्दी साहित्य : विमर्श के आईने में**
संपादक	:	डॉ. पायल लिल्हारे, डॉ. श्याम मोहन पटेल
©	:	संपादक
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस**
		3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,
		कानपुर - 208 021
		Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com
		info@vanyapublications.com
		Website : www.vanyapublications.com
		Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**प्रथम, 2021**
मूल्य	:	**₹ 1100.00**
आवरण	:	के. रवीन्द्र
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	पूजा प्रिंटर्स, कानपुर

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

40.

विनोद कुमार शुक्ल की कविताओं में पर्यावरणीय चेतना

डॉ. प्रिया ए.

वर्तमान समय भीषण पर्यावरण संकट का समय है। मनुष्य ने एक ओर विकास एवं उन्नति के नाम पर समस्त जीवसृष्टि में मानव–सभ्यता को अति उच्च शिखर पर स्थापित किया है तो दूसरी ओर उसी विकास यात्रा ने मानव–सभ्यता को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। इसके फलस्वरूप वर्तमान समाज भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उदारीकरण, बहुराष्ट्रीय साम्राज्यवादी नीतियाँ आदि के गिरफ्त में जकड़ा हुआ है। साथ ही बदलते वैश्विक परिदृश्य और औपनिवेशिक संस्कृति ने मानव जीवन पर गहरी छाप छोड़ दी है। ऐसे विकल परिवेश में अपने समय के प्रति जागरूक साहित्यकार की रचनाओं में इन संकटों का स्पष्ट प्रतिफलन होना स्वाभाविक ही है। इस सन्दर्भ में हिंदी साहित्य की समकालीन कविता उल्लेखनीय है, जिसमें वर्तमान समाज में व्याप्त मानवीय संकट से सचेत कवि प्रतिरोध की जरूरत की ओर हर जगह संकेत करते हैं। अतः समकालीन कविता में कविता का सामाजिक पक्ष दृष्टव्य है।

समकालीन कवि विनोद कुमार शुक्ल अपनी रचनाओं में पारिस्थितिकी का सजीव मानचित्र खींचने वाले हैं। हिंदी कविता के लोकतंत्र और लोकायतन में विनोद कुमार शुक्ल की कविता अनूठी सहजता के साथ उपस्थित होती है। मनुष्य और प्रकृति के बीच संबन्धों के साझा– सौंदर्य को कवि अपनी रचनाओं में स्थान देते हैं। अतिरिक्त नहीं (2000), कविता से लंबी कविता (2001), आकाश धरती को खटखटाता है (2006), कभी के बाद अभी (2012) आदि उनके काव्य संकलन हैं। इन काव्य संकलनों में प्रकृति को केंद्र में रखा गया है। मानव जीवन यथार्थ के निकट रहने वाली हमारी सास्कृतिक आधारशिला है प्रकृति। विनोद कुमार शुक्ल की कविता का यथार्थ पारिस्थितिकी की यथार्थता को आत्मसात करके मानव जीवन के बृहत आयामों को प्रस्तुत करता है।

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE ★ PAMPADY - 686 502 ★

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिन्दी में केरलीयों के कदम

(भाषा समन्वय वेदी सदस्यों के आत्मकथ्य)

पी.राघवजी स्मृति ग्रंथ

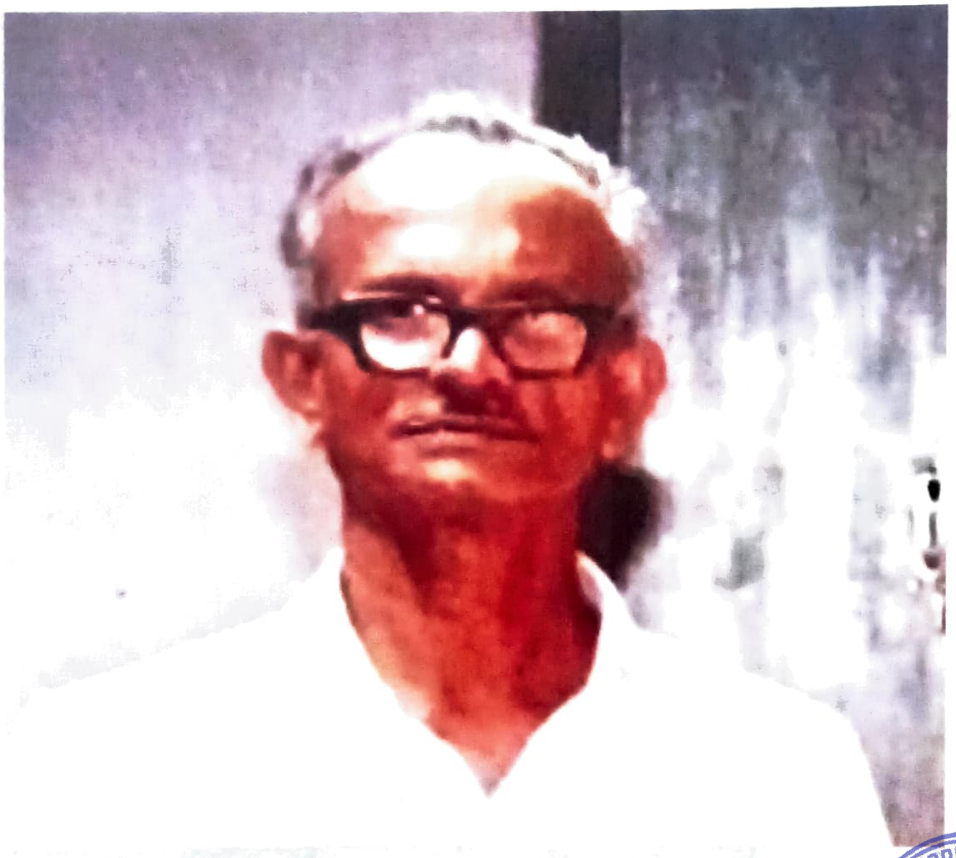

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

संपादक - डॉ.आरसु

हिन्दी में केरलीयों के कदम

(भाषा समन्वय वेदी सदस्यों के आत्मकथ्य)

पी.राघवजी स्मृति ग्रंथ

संपादक - डॉ.आरसु

- राष्ट्रीय आन्दोलन के समय गाँधीजी के आह्वान को मानकर देशभक्तों ने हिन्दी सीखना अपना राष्ट्रीय कर्तव्य मान लिया। कई लोग दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की गतिविधियों से लाभान्वित हुए। देशप्रेमियों ने इस दीपशिखा को प्रज्ज्वलित करके रखा। वे इधर अपने अनुभव परवर्ती पीढ़ी के लिए बाँट रहे हैं।

- पूर्ववर्ती हिन्दी प्रचारकों से प्राप्त प्रेरणा-प्रकाश का परिचय इस में मिलता है। यह किताब अपने आप में पीढियों का संगम बन गया है। वर्धा आश्रम में गाँधीजी के शिक्ष्य रहे कालिकट निवासी पी.राघवन के लिए यह किताब समर्पित है।

- आज विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों तथा भारत सरकार के कार्यालयों में सेवारत हिन्दी कार्यकर्ता इस अभियान से जुड़े हुए हैं। स्वतंत्रता संग्राम के बाद के केरल के हिन्दी प्रचार की विकासयात्रा को भी यह ग्रंथ दिग्दर्शित करता है। यह ग्रंथ परवर्ती पीढ़ी के लिए आज तक अनुपलब्ध सामग्रियों की खान है।

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

अमृतसागर प्रकाशन
तिरुवनन्तपुरम 695006
amritsagar2020@gmail.com

ISBN: 978-81-952192-4-7

9 788195 219247

978-81-952192-4-7

हिन्दी में केरलीयों के कदम
Hindi Main Keraliyon ke Kadam

Essay Collection
Hindi

Chief Editor
Dr.Arsu
Editor
Dr.K.C.Ajayakumar

Published by

अमृतसागर प्रकाशन
Amritsagar Prakashan
Thiruvananthapuram 695006
Ph.9447944721
Email-amritsagar2020@yahoo.co.in

First Edition
September 2021

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Printed at

Sujili Colour Printers
Chathannoor, Kollam 695072

Price Rs.400/-

ISBN : 978-81-952192-4-7

हिन्दी भाषा के प्राँगण में : मेरे अनुभव के साक्ष्य

डॉ.प्रिया ए

हिन्दी भाषा के विस्तृत प्राँगण में प्रवेश करते समय 'माता-पिता-गुरु-ईश्वर' इस उक्ति को सार्थक करनेवाली घटनाएँ ही मेरे जीवन में घटी थीं। चौथी कक्षा के बाद अप्रैल-मई महीनों में जो छुट्टी का समय मिलता था, तब मातापिता ने मुझे महात्मा हिन्दी विद्यालय में भर्ती किया। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, एरणाकुळम की शाखा मेरे गाँव पेरुम्पावूर में भी थी। मेरे पिताजी की हिन्दी की पढ़ाई भी वहीं से शुरू हुई थी। महात्मा हिन्दी विद्यालय के गुरु दिवाकरन नायर जी, उनकी बेटी लता जी, एवं उनके कई छात्रगण मिलकर वहाँ अध्यापन का कार्य संभालते थे। अप्रैल की पहली तारीख को मैं भी वहाँ की छात्रा बनी। प्राथमिक के क्लास में लताजी हिन्दी अक्षरों की दुनिया में मुझे ले चलीं। हर दिन अक्षरों को पेन्सिल से किताब के पन्नों पर लिख-लिखकर, पुनरावृत्ति करके पढ़ना था। शुरुआत में मुझे यह बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगी। क्योंकि आसपास के बच्चे एवं मेरा छोटा भाई खेल की रंगीन दुनिया में मग्न रहते थे, तो मुझे इस खेल की दुनिया से दूर रहना पड़ता था। सबेरे से दुपहर तक क्लास होता था, बाद में पढ़ाई-लिखाई का काम भी करना था। इस निराश मन से आगे बढ़ते-बढ़ते मुझे हिन्दी शिक्षा की यह दुनिया अच्छी लगने लगी थी। दो महीनों में अक्षरों की दुनिया से परिचित होकर शब्दों की दुनिया में प्रवेश किया। अक्षर और शब्द की दुनिया में जब वाक्य को पहली बार पढ़ा तो शब्दार्थ से भरे साहित्य की जादूई दुनिया में अचरज के साथ रह गयी। जून में स्कूल खुलने पर क्लास में भी हिन्दी का पाठ शुरू हुआ था। हमारे स्कूल में (आश्रम स्कूल, पेरुम्पावूर, एरणाकुळम जिला,) पाँचवीं कक्षा से हिन्दी की शिक्षा शुरू हुई थी। दो महीनों के अभ्यास के कारण मेरे लिए अक्षरों की दुनिया कठिन नहीं लग रही थी। स्कूली शिक्षा में सब से पहले तंकमणि जी ने हिन्दी अक्षरों का पाठ पढ़ाया था। स्कूली शिक्षा के साथ-साथ महात्मा हिन्दी विद्यालय की शिक्षा भी समानांतर आगे बढ़ने लगी थी। सातवीं कक्षा के बाद हाईस्कूल में प्रवेश किया तो साराम्मा जी एवं बेबी जी ने हिन्दी का अध्यापन कार्य किया था।

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY-686502

प्रवासी मजदूरों की समस्या चुनौतियाँ और समाधान

भाग–दो

सम्पादक

डॉ. मनीष वाघेला

डॉ. केतन शाह

डॉ. गायत्रीदेवी लालवानी

डॉ. मनीष वाघेला

सन् 2020 का साल देश और दुनिया के लिए बड़ा ही आघातजनक व्यतीत हो रहा है। कोविड–19 ने देश और दुनिया में तहलका मचा दिया है। इस महामारी के चलते तकरीबन दुनिया-भर में महीनों तक तालाबन्दी रही। चीन के वुहान से जन्म लेने वाली कोरोना महामारी ने देखते-ही-देखते दुनिया-भर के देशों को अपनी चपेट में ले लिया। अर्थ की दृष्टि से आदमी छोटा हो या बड़ा हर किसी को अपने घरों में बन्द रहने की नौबत आयी। देश और दुनिया की रफ्तार बिल्कुल थम-सी गयी। यातायात ठहर-सा गया। सड़कें सुमसान हो गयीं। ऐसे में वतन वापसी के चलते लाखों करोड़ों की तादात में श्रमहारा वर्ग तपती धूप में खुले आसमान के नीचे सड़कों पर आ गया। चारों ओर से इन्सानी आवाजें उठने लगीं और मानवीय संवेदना कराह उठी। शायद ही दुनिया का कोई ऐसा देश हो जो इस महामारी से प्रभावित न हुआ हो।

जन्म : 5 अप्रैल, 1967, ग्राम - बालवा, तहसील - जामजोधपुर, जामनगर (गुजरात) • **शिक्षा :** एम.ए., पीएच. डी. • **प्रकाशित पुस्तकें :** माखनलाल चतुर्वेदी एवं झबेरचंद मेघाणी की कविता में राष्ट्रीय चेतना; महान उपन्यासकारों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व; हिन्दी सन्त काव्य धारा एवं दलित काव्य धारा • **संपादित पुस्तक :** गाँधीविचार और साहित्य एक पुन: चिन्तन • **लेखन :** राष्ट्रवीणा, खोज, संघर्ष, स्ट्रगल ई जर्नल ऑफ दलित लितरेरी स्तडीज, शब्द साधना, किएटीव स्पेस, सुरभि, आयुद्ध, शब्द संचार आदि विभिन्न राष्ट्रीय अन्तरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में शोधालेख एवं कवितायें प्रकाशित, आकाशवाणी वार्तालाप, फूले- आंबेडकर विचारधारा के वाहक • **सम्प्रति :** अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डॉ. वि.आर. गोढाणिया गर्ल्स कॉलेज, पोरबंदर-360575 • **सम्पर्क :** मधुरम् 56, श्रीजी नगर 1, सुरुचि स्कूल के पास, खापट, पोरबंदर- 360575 • सचल भाष : 09824050845 • ई-मेल : mnvaghela109@gmail.com

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE ★ PAMPADY - 686 502 ★

अनुज्ञा बुक्स
दिल्ली-110032

978-93-89341-87-4

9 789389 341874

₹ 900.00

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक अथवा सम्पादक/सम्पादकों इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN 978-93-89341-87-4

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-22825424, 7291920186, 09350809192
www : anuugyabooks.com

मूल्य : 900 रुपये

आवरण
असरार 'सागरी'

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

16

समकालीन कविता के केन्द्र में मज़दूर

डॉ. प्रिया ए.

वैश्वीकरण के दौर ने समाज के कई क्षेत्रों में विकास के प्रतिमान दिखाये हैं। इसके साथ उत्पन्न बद्हाली के कारण मानव वर्गभेद में भी काफी उभार हुआ। सतही विकास का मानचित्र दिखाकर सत्तावर्ग ने जनता को धोखा दिया। ऐसी सतही विकास-प्रक्रिया ने समाज में आर्थिक गैर-बराबरी को बढ़ावा दिया। मेहनतकश वर्ग की स्थिति बदतर हुई, साथ ही उनका परिवार आर्थिक तंगी से टूटने लगा। परिवार के आर्थिक उद्धार के लिए गरीब घर के बच्चों को भी शिक्षा का मार्ग छोड़ना पड़ा। मज़दूरी का रास्ता अपनाना पड़ा। इस प्रकार शिक्षा एवं कक्षा से दूर होकर, अलग वातावरण में इन बाल मज़दूरों को जीना पड़ा। नगरों और महानगरों की सड़कों, गलियों और झुग्गी-झोंपड़ियों में पनपती इन मज़दूर व बाल-मज़दूरों की संख्या इस हकीकत का बयान करती है। समकालीन हिन्दी कविता में मज़दूरों की इस पीड़ाजनक हालत के बारे में चर्चा हुई हैं।

समाज में व्याप्त आर्थिक सम्पन्नता तथा आर्थिक सन्तुलन के नारों के बीच मज़दूर-वर्ग की जीवन संरचना दुविधात्मक हालत की ओर धकेलती जा रही है। भारतीय संविधान में भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए समानता का उल्लेख किया गया है। इस अधिकार के अनुसार भारत के राज्य-क्षेत्र के सभी व्यक्ति कानून की दृष्टि में समान है। जाति, धर्म, अर्थ, वर्ग आदि किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में व्याप्त आर्थिक असमानता एवं उससे उत्पन्न उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच की खाई को समकालीन कवि अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करते हैं। समाज की ऐसी हालत को पंकज चतुर्वेदी अपनी कविता दिल्ली प्रसंग' में करारा व्यंग्य से यों अभिव्यक्त करते हैं–

"सन् उन्नीस सौ पैंसठ में
रघुवंशी गये थे दिल्ली
साथ में थे लल्लू-दुबे
गाँव में तब बिजली नहीं आयी थी

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

हिंदी साहित्य आदिवासी चेतना की परख

डॉ. पायल लिल्हारे

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

हिंदी साहित्य मे विमर्श समीक्षा की नूतन अवधारणा है। समकालीन समीक्षा की परिधि असीमित है जबकि विमर्श विशेषतः हाशिए के समाज को लेकर केंद्रित है। विमर्श चेतना को उदभूत करने का उपकम है। इस आधार पर दलितों और आदिवासियों के शोषण और उत्पीड़न को लेकर साहित्यकार सजग–सचेष्ट हुए परिणामतः विमर्श के निकष पर इनमें परिवर्त्तन और नवसृजन का जो वृत्त बना, वह साहित्य की उपलब्धि कही जा सकती है। इस दिशा में इधर शिद्दत और निष्ठा से जो कार्य हुए हैं, वे उल्लेखनीय सिद्ध हुए हैं। इसी कड़ी में डॉ.पायल लिल्हारे के द्वारा संपादित ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य : आदिवासी चेतना की परख' महत्वपूर्ण है। इस ग्रंथ में आदिवासियों की संस्कृति, लोकजीवन, इतिहास और आर्थिक आधार पर उनके शोषण और दोहन को आधार बनाकर उनकी चेतना को उद्‌बुद्ध और प्रतिभा को प्रबुद्ध करके साहित्य के माध्यम से उसे विवेचित करने विशेषतः हिंदी साहित्य के आधार पर परखने का यह प्रयास प्रशंसनीय ही नही, स्तुत्य भी है। प्रस्तुत ग्रंथ में विद्वान लेखकों ने नूतन स्थापना से ग्रथ को महत्वपूर्ण बना दिया है। इसके लिए लेखक तो बधाई के हकदार हैं ही, संपादक के रूप में डॉ. पायल लिल्हारे की संकल्पना और प्रबंधन–पटुता विशेषाल्लेखनीय है। आदिवासियों को जानने–समझने और हिंदी साहित्य के माध्यम से परखने की दृष्टि से उद्‌भावित यह ग्रंथ नयी पीढ़ी को दिशा–निर्देश प्रदान करेगा, ऐसा मेरा मानना है। डॉ.पायल लिल्हारे को बधाई व शुभकामनाएँ ।

डॉ. सुरेश माहेश्वरी, डी.लिट्.
पूर्व प्राध्यापक / विभागाध्यक्ष, हिंदी
अमलनेर, जिला–जलगाँव (महाराष्ट्र)

शिक्षाविद् एवं समीक्षक डॉ.पायल लिल्हारे हाशिए के समाज को आधार बनाकर निष्ठा और समर्पण से एकांत साधक–बतौर कार्य करने वाली विदुषी हैं। इनके संपादन में एतद् विषयक अनेक संपादित ग्रंथ प्रकाशित होकर चर्चित रहे हैं। इसी दिशा में इनके द्वारा संपादित महत्वपूर्ण ग्रंथ 'हिंदी साहित्य : आदिवासी चेतना की परख' नूतन स्थापना के साथ प्रस्तुत हुआ है। इसमें बत्तीस शोधालेख समाहित हैं जो शीर्षक की सार्थकता को सिद्ध करते हैं। इस ग्रंथ की पीठिका और सैद्धांतिकी–रूप में जहाँ आदिवासियों के जनजीवन, उनकी संस्कृति, विकास–क्रम, अस्तित्व के संकट, चुनौती, रणनीति को रेखांकित करते हुए अस्तित्व की तलाश की गयी है, वहीं हिंदी साहित्य को आधार बनाकर विशेषकर काव्य और कथा–केंद्रित करके अध्ययन की पड़ताल की गयी है। इस तरह हिंदी साहित्य में आदिवासी–जनजातीय–विमर्श की अध्ययन परंपरा को विकसित करने में यह ग्रंथ उल्लेखनीय होगा, इसमें दो मत नहीं है। डॉ.पायल लिल्हारे ने श्रम और मनायोग से इस ग्रंथ को संपादित करके इस योग्य अवश्य बना दिया है जिससे अध्येताओं को आधार मिले और पाठकों को संतृप्ति भी। इस बहुप्रतीक्षित ग्रथ के संपादन के लिए डॉ. पायल बधाई की हकदार हैं। आगे भी इसी तरह सृजन और संपादन से नये उत्कर्षों को स्वायत्त करेंगी, ऐसी आशा करता हूँ।

डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर (राजस्थान)

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

available on ..... amazon.in Flipkart

Vanya
वान्या पब्लिकेशंस
3ए-127 आवास विकास, हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर-208021
9450889601, 7309038401
vanyapublicationskanpur@gmail.com
info@vanyapublications.com
www.vanyapublications.com

₹685.00
ISBN 978-93-91119-05-8
9 789391 119058 >

rudra graphics

ISBN : 978-93-91119-05-8

मूल्य : छः सौ पचासी रुपये मात्र

पुस्तक	:	**हिंदी साहित्य : आदिवासी चेतना की परख**
संपादक	:	डॉ. पायल लिल्हारे
©	:	संपादक
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस** 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर – 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**प्रथम, 2021**
मूल्य	:	**685.00**
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

30.

वंचित अस्मिताओं के पक्षधर - अनुज लुगुन

डॉ. प्रिया ए.

समकालीन हिन्दी साहित्य के आदिवासी कवि के रूप में अनुज लुगुन एक सशक्त हस्ताक्षर बने हुए हैं। वे झारखंड की पृष्ठभूमि से आने वाले हैं। उनके द्वारा लिखी गई 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' नामक लंबी कविता को युवा साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनकी कविता मुण्डा समाज और आदिवासी समुदाय के सांस्कृतिक संकटों को चित्रित करने के साथ–साथ पूँजीवादी एवं नवसाम्राज्यवादी भोग–लिप्साओं पर प्रहार करती है। अतीत की स्मृति, वर्तमान का यथार्थ और भविष्य के स्वप्न के समग्र रूप का निर्माण करती है। पूँजीवादी सभ्यता का तिरस्कार करते हुए कविता एक नए मानक का सृजन करती है। वर्तमान समय की कविता की दुनिया में एक ओर वैश्वीकरण का प्रतिरोध और दूसरी ओर वंचित अस्मिताओं का संघर्ष है। वर्तमान संकटों के इस दौर में सहजीविता एवं सामूहिकता से ही अस्मिता को सुरक्षित रखा जा सकता है। कवि का मानना है कि जो सहजीवि होगा, वह स्वभावतः वंचित अस्मिताओं का पक्षधर होगा। वर्तमान समय में वैश्वीकरण ने आदिवासी समुदाय पर सबसे बड़ा धक्का पहुँचाया है। अनुज लुगुन अपनी कविता में वंचित अस्मिताओं के पक्षधर बनकर अपनी आंतरिक साझेदारी की भावना को प्रस्तुत करते हैं। इस विशेषता के माध्यम से उनकी कविता संघर्ष के सौंदर्य को रचकर पूरे विश्व की परिक्रमा करती है। अनुज लुगुन का काव्य संसार संघर्ष की प्रतिध्वनि को आकार देने के साथ–साथ आदिवासी समाज के वंचित यथार्थ के प्रति अपनी पक्षधरता को दर्ज भी करता है।

प्रकृति और आदिवासी जीवन का परस्पर सामंजस्य बहुत ही गहरा है। उनकी अस्मिता या अस्तित्व प्रकृति से अभिन्न होता है। प्रकृति और आदिवासियों के आत्मीय संबन्ध को 'आदिवासी' शीर्षक कविता में यों व्याख्यायित किया है– "वे जो नंगे पैर / चुपचाप चले जाते हैं जंगली पगडंडियों में / वे जानते हैं जंगली जड़ी–बूटियों से / अपना इलाज करना / वे जानते हैं जंतुओं की हरकतों से / मौसम का मिजाज समझना / सारे पेड़–पौधे, पर्वत–पहाड़ / नदी झरने जानते हैं। कि वे कौन हैं।"

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

कविता की महायात्रा

डॉ. प्रिया ए.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

डॉ. प्रिया ए.

जन्म : एरणाकुलम जिला, केरल।

शिक्षा : एम.ए. (महाराजास कॉलेज), बी.एड. (महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय), पीएच.डी. (कोच्चिन विश्वविद्यालय), डिप्लोमा इन हिन्दी ट्रान्स्लेशन (हिन्दी प्रचार सभा)।

प्रकाशन : विविध राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय यू.जी.सी. लिस्टेड व पियर रिव्यूड पत्र–पत्रिकाओं एवं संपादित पुस्तकों में 100 शोध आलेख प्रकाशित। साठ से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रपत्र प्रस्तुति। विविध पुरस्कारों से सम्मानित। विविध राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में कविताएँ एवं अनुवाद प्रकाशित। विविध राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में सदस्यता। "कोंपलें" एक हिन्दी काव्य संकलन प्रकाशित (माला प्रकाशन)।

संप्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, के.जी. कॉलेज, पाम्पाडी, कोट्टयम जिला, केरल–686 502

ई–मेल : priyauday111@gmail.com

Also available at : flipkart amazon

वान्या पब्लिकेशंस

3ए-127 आवास विकास, हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर-208021

9450889601, 7309038401

vanyapublicationskanpur@gmail.com

info@vanyapublications.com

www.vanyapublications.com

₹450/-

ISBN 978-93-91119-72-0

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

ISBN : 978-93-91119-72-0

मूल्य : चार सौ पचास रुपये मात्र

पुस्तक	:	**कविता की महायात्रा**
लेखिका	:	प्रिया ए.
©	:	लेखिका
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस** 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**प्रथम, 2021**
मूल्य	:	**450/-**
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रिंटर्स, कानपुर

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

भारतातील राजकीय व सामाजिक चळवळी

मुख्य संपादक
प्राचार्य. डॉ. आय. डी. पाटील
संपादक
प्रा. डॉ. आर. एन. शेवाळे
प्रा. पी. एम. सोनवणे

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

अथर्व प्रकाशन

भारतातील विविध सामाजिक चळवळींचे आणि त्यांच्या प्रेरणांचे प्रतिबिंब भारतीय संविधानातील जिवनमुल्यांमध्ये दिसुन येतात.कोणत्याही समाज क्रांतीसाठी जनाधाराची अनिवार्यता आवश्यक असते. शेतकरी चळवळ, आरक्षण चळवळ, मानवाधिकार चळवळ, आदिवासी चळवळ, स्त्रीवादी चळवळ किंवा इतर सर्व क्रांतीकारी व परिवर्तनवादी चळवळीसाठी जनमताचा सहजाविष्कार होत असतो. म्हणून सामाजिक व राजकीय चळवळीला तिचे लोकशाही अविष्करण करण्यास पूर्ण मूभा असली पाहिजे. कारण ऐतिहासिक कालखंडापासून ते आजपर्यंत स्वातंत्र्य आणि लोकशाहीकडेच मानवी मताचा स्वाभाविक कल राहिलेला आहे. म्हणून भारतातील परिवर्तनवादी लोक, जनआंदोलनातील सर्व समविचारी प्रवाह, राजकीय विचार प्रणालीच्या समर्थकांनी एकत्र येवून लोकोन्नतीच्या कार्यास वाहून घेणे सांप्रत काळाची गरज आहे.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

अथर्व पब्लिकेशन्स्
ऑनलाईन पुस्तक खरेदीकरिता...
www.atharvapublications.com
ISBN 978-93-88544-74-0
₹ - 995/-

अथर्व पब्लिकेशन्स

भारतातील राजकीय व सामाजिक चळवळी
Political and Social Movements in India

© सर्व हक्क

ISBN 13 : 978-93-88544-74-0
पुस्तक प्रकाशन क्र. ६८३

प्रकाशक
युवराज भटू माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स
धुळे : १७, देवीदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुळे ४२४००१.
संपर्क : ९४०५२०६२३०
जळगाव : तळमजला, ओम हॉस्पिटल, अँग्लो उर्दू हायस्कूलजवळ, ढाके कॉलनी, जळगाव ४२५००१. **संपर्क :** ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७
ई-मेल : atharvapublications@gmail.com
वेबसाईट : www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती : १०/०८/२०१९
अक्षरजुळवणी : अथर्व पब्लिकेशन्स

मूल्य : ₹ ९९५/-

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

विद्याभारती शैक्षणिक मंडळ अमरावती संचलित संत मुक्ताबाई कला आणि वाणिज्य महाविद्यालय, मुक्ताईनगर येथे दिनांक १०/०८/२०१९ रोजी झालेल्या एकदिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्रातील निवडक लेख

या पुस्तकात समाविष्ट लेखांचे हक्क ज्या-त्या लेखकाकडे असून त्यांच्या मताशी मुख्य संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

भारतीय समाज और महिलाओं के मानवाधिकार

– डॉ. प्रिया ए.
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
के. जी. कॉलेज, पाम्पाडी, कोट्टायम, केरल

मानवाधिकार वे अधिकार होते हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति को मानव मात्र होने के नाते ही प्राप्त होते हैं। मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम १९९३ में मानवाधिकारों को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि ''व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता, समानता और गरिमा से संबन्धित वे अधिकार मानवाधिकार कहलाते हैं जो संविधान द्वारा प्रत्याभूत है, अंतर्राष्ट्रीय संधियों में उल्लिखित हैं अथवा भारत में न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय हैं।'' भारत में विधि का शासन है और कानून में विधानसभा द्वारा मानवाधिकार से संबन्धित कई प्रावधान किए गए हैं। हमारे संविधान और कानून में विधानसभा द्वारा मानवाधिकार से संबन्धित कई व्यवस्थाएँ की गयी है। मानवाधिकार किसी भी सभ्य समाज की आधारशिला है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में इसकी अनिवार्यता बढ़ जाती है। आम व्यक्ति को पर्याप्त मानवाधिकार उपलब्ध हैं तो उस समाज विशेष को सभ्य, सुसंस्कृत और विकसित कहा जा सकता है।

हमारे देश में मानवाधिकार सार्वभौमिक रूप में लागू हैं। मानवाधिकार एक गतिशील अवधारणा है, जो समय के अनुरूप बदलती रहती है। आजकल प्रत्येक मनुष्य को सभी प्रकार के अधिकार प्राप्त करने के अवसर भी उपलब्ध है। वर्तमान समय दुनियाभर में मानवाधिकारों की रक्षा के लिए आँदोलन चल रहे हैं। यह एक प्रामाणित तथ्थ है कि दुनिया में सब से अधिक अपराध और अत्याचार मिहलाओं के खिलाफ होते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में महिलाओं के मानवाधिकार काफी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। विश्व के लगभग सभी देशों में महिलाओं को विशेष अधिकार दिए गए हैं ताकि वे सम्मानपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकें।

महिला आँदोलन के इस दौर में एक ओर जहाँ महिलाओं को अधिकाधिक दिए जाने की कवायद चल रही है वहीं दुसर और महिलओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने का प्रयास भी जारी है। शिक्षा के क्षेत्रों में आगे बढ़ने के कारण महिलाओं को अपने घर के बाहर के बाहर जाना पड़ता है। महिलाओं को संरक्षण प्रदान करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने समय.समय पर काफी मार्ग खोल दिए हैं।

महिलाओं के विरुद्ध सभी प्रकार के विभेदों की समाप्ति संबन्धी अभिसमय की घोषणा सन १९७९ में की गयी थी औ ३ सितंबर, १९८१ से यह अभिसमय दुनियाभर में लागू हो गया। इस अधिकार पत्र में पुरुषों और महिलाओं के समान

KANAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

नै हि का

Naipunnya Hindi Patrika

A FOLIO OF WEBINAR PROCEEDINGS

A MULTI-LINGUAL NATIONAL WEBINAR
on
Aesthetics, Existence and Zeitgeist
5, 6 & 7 NOVEMBER 2020

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Naipunnya®
To reach the unreachable

DEPARTMENT OF LANGUAGES
NAIPUNNYA INSTITUTE OF MANAGEMENT AND INFORMATION TECHNOLOGY (NIMIT),
PONGAM, KORATTY, PIN-680308

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Naipunnya®
To reach the unreachable

ISBN: 978-938-994217-0

कला, साहित्य और संस्कृति का अद्‌भुत सामंजस्य 'कोणार्क'

डॉ. प्रिया ए.
असिस्टेंट प्रोफेसर
के.जी.कॉलेज,पाम्पाडी,कोट्टयम

कला एवं साहित्य, संस्कृति के संवाहक हैं। भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्ष कला और साहित्य के माध्यम से प्रकट होते हैं। साहित्य लेखन भी एक प्रकार की कला है। कला की पूर्णता उसकी रसात्मकता या आस्वादन पक्ष से ही होती है। इस पक्ष के तहत हम पाठक, श्रोता या दर्शक हो, स्थूल जगत से सूक्ष्म की ओर यात्रा करते हैं। आस्वादन पक्ष एक ऐसा मनोवैज्ञानिक पक्ष है, जो हमें कला या साहित्य के माध्यम से आनंद की, या रस निष्पत्ति की चरम सीमा तक ले जाता है। जिस कला में सुकुमारता और सौंदर्य की अपेक्षा रहती है तथा जिसकी सृष्टि मुख्यतः मनोविनोद के लिए हो, ऐसी कलाओं को ललित कलाएँ (Fine arts) कहा जाता है। ललित कला के अन्तर्गत दृश्यकला (Visual arts), मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला (Photography) आदि आता है) और प्रदर्शन कला (Performance arts) के अन्तर्गत नृत्य, संगीत, नाट्य, भाषण एवं अभिनय आदि आते हैं। इस मायने में साहित्य का क्षेत्र ललित कलाओं की श्रेणी में आता है।

कला, साहित्य और संस्कृति के समन्वय को जगदीशचन्द्र माथुर का ऐतिहासिक नाटक 'कोणार्क' संपन्न करता है। कोणार्क में दृश्यकला एवं प्रदर्शन कला का एक अद्‌भुत सामंजस्य देख सकते हैं। उसकी कथावस्तु मुख्य रूप से कोणार्क मंदिर की स्थापना को लेकर है। कोणार्क एक भौतिक स्मारक नहीं बल्कि भारत के सांस्कृतिक वैभव का धरोहर है। कोणार्क का सूर्य मंदिर उड़ीसा प्रान्त में चंद्रभागा नदी के सागर संगम पर स्थित है। इस नाटक में नाटककार ने कोणार्क मंदिर के भव्य सौंदर्य एवं शिल्पियों की कलाकृति को विशेष महत्व दिया है। ऐतिहासिक नाटक का प्रमुख पात्र उत्कल राज्य का प्रधान शिल्पी और कोणार्क का निर्माता विशु का कथन है कि "हमने पत्थर में जान डाल दी है, उसे गति दे दी है। वह भूल रहा है कि वह धरती का पदार्थ है। उसके पैर धरती पर नहीं टिकते। पत्थर का यह मन्दिर आज कल्पना के स्पर्श से हवा की तरह गतिमान, किरण की

Prof.(Dr.) Renny P. Varghese
Principal
Kuriakose Gregorios College
Par